Date
7/05/2020

B.Ed.
2nd Year

Subject – Gender, School and Society
Topic – Teacher As An Agent of Change

परिवर्तन :- परिवर्तन का सामान्य तात्पर्य यह है, किसी क्रिया या वस्तु की पहले की स्थिति में बदलाव आ जाना।

फिशर के अनुसार – "परिवर्तन पहले की अवस्था या अस्तित्व के प्रकार में अन्तर को कहते हैं।"

परिवर्तन का सम्बन्ध प्रमुख रूप से तीन बातो से होता है,
1) वस्तु,
2) समय,
3) भिन्नता

परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो सभी कालों एवं स्थानों में घटित होती रहती है। परिवर्तन किसी भी दिशा में हो सकता है। परिवर्तन स्वत: आ सकता है या जानबूझकर योजनाबद्ध रूप से भी लाया जा सकता है।

परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका :-

शिक्षक एवं शिक्षार्थी सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के आधार स्तम्भ है किन्तु परिवर्तन के शैक्षिक कारक में शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
परिवर्तन अभिकर्ता के रूप में शिक्षक अपनी भूमिका का निर्वहन निम्न प्रकार कर सकता है—

P.T.O.

Scanned with CamScanner

- लैंगिक निरपेक्ष भाषा का विकास कर शिक्षक परिवर्तन कर सकता है।
2) शिक्षक को दोनो ही लिंग से सम्बन्धित उदाहरण देना चाहिए।
3) अलग - अलग बैठने की व्यवस्था करने के बजाय एक साथ बैठने की व्यवस्था को प्रोत्साहन देना चाहिए।
4) कक्षागत गतिविधियों में समान भागीदारी सुनिश्चित कर शिक्षक परिवर्तन कर सकता है
5) → लड़कों - लड़कियों को एक - दूसरे के प्रति संवेदनशील बनाना चाहिए।

परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप में शिक्षक के समक्ष बाधाएँ :-

1) अशिक्षा, 2) अन्धविश्वास, 3) रूढिबद्ध समाज,
4) संकीर्ण सोच, 5) धार्मिक एवं राजनैतिक कारण,
6) स्वार्थपरता, 7) सांस्कृतिक अलगाव,
8) इच्छा- शक्ति की कमी,

Suggestions :- बाधाओ को दूर करने के लिए -

1) लोगों को सामाजिक कुरीतियों एवं संकीर्णता के प्रति जागरूक करना चाहिए।
2) शिक्षा का व्यापक रूप से प्रचार -प्रसार करना चाहिए।
3) सशक्त शिक्षकों के निर्माण के लिए शिक्षक- प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।
4) → परिवर्तन हेतु औपचारिक एवं अनौपचारिक अभिकरणों का प्रयोग करना चाहिए।
5) → स्त्री शिक्षा एवं पिछड़े वर्गों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

Complete

Sudhir Tyagi
7/5/2020